पाठ 15. तोत्तोचान

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में अंतर-वैयक्तिक संबंध का कौशल विकसित करना है ताकि वे विभिन्न व्यक्तियों व प्राणियों से सकारात्मक तरीके से जुड़ने की समझ पैदा कर सकें। तेत्सुको कुरोयानागी द्वारा लिखित 'तोत्तोचान' एक विदेशी लोककथा है। बाल मन की सादगी, निश्छलता व बाल-सुलभ चंचलता का पक्ष इस कहानी के माध्यम से उकेरा गया है।

पाठ का सार

इस कहानी में दो बच्चों की पेड़ पर चढ़ने की बहादुरी का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है। तोमोए में हरेक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने स्वयं के चढ़ने का पेड़ मानता था। यासुकीचान को पोलियो था इसलिए वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था। तोत्तोचान ने यासुकीचान को अपने पेड़ पर चढ़ने के लिए आमंत्रित किया। वह एक सीढ़ी के सहारे उसको ऊपर चढ़ाने लगी परंतु कामयाब न हो सकी। तब वह एक तिपाई-सीढ़ी उठा लाई तथा उसको पेड़ पर चढ़ाने का प्रयत्न करने लगी। यासुकीचान सीढ़ी पर तो चढ़ गया परंतु सीढ़ी से पेड़ पर नहीं आ पा रहा था। दोनों की हिम्मत जवाब देने लगी मगर तोत्तोचान ने उस समय साहस तथा ताकत का अद्भुत परिचय दिया। अंत में तोत्तोचान यासुकीचान को पेड़ पर चढ़ाने में सफल हो गई।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  जीवन में कुछ नया कर गुज़रने की इच्छा और साहस हर व्यक्ति में होता तो दुनिया कुछ और होती। साहसिक कार्य करने वाले कुछ बालक-बालिकाओं के विषय में बताते हुए पाठ के लिए वातावरण तैयार करें। कहानी का अंशों में वाचन करवाएँ, गद्यांश की वैचारिक समीक्षा व वार्तालाप के बाद पाठ संपन्न होने पर बहुविध योग्यताओं-दक्षताओं की दृष्टि से प्रश्नोत्तर हल करवाएँ। शारीरिक रूप से अक्षम साहसी बालकों/व्यक्तियों के विषय में बतलाएँ कि वे जीवन जीने का संघर्ष किस प्रकार एक चुनौती के रूप में स्वीकारते हैं।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 40** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - वाक्य की परिभाषा दें। रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद बतलाएँ। संयुक्त वाक्य व मिश्र वाक्य में अंतर विशेष रूप से समझाएँ।
  - वाक्य में होने वाली सामान्य अशुद्धियों के कारण की चर्चा करें।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - पोलियोग्रस्त बच्चों से बातचीत करते समय बच्चे सहानुभूति न दिखाकर अपनापन दिखाने पर ज़ोर दें।
  - पोलियो की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की चर्चा करें। हो सके तो बच्चे 'पोलियो रविवार' के दिन स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर वहाँ हो रही गतिविधियों का अवलोकन करें।